डॉ. रॉबर्ट वानॉय, ड्यूटेरोनॉमी व्याख्यान 8

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांट

समीक्षा

में वाचा प्रपत्र की वर्तमान स्थिति

पिछले सप्ताह हम आपकी रूपरेखा पर रोमन अंक III पर चर्चा कर रहे थे। वह पृष्ठ दो है, "व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में अनुबंध प्रपत्र और इसके ऐतिहासिक निहितार्थ।" लेकिन हमारे दिमाग को ताज़ा करने के लिए, "ए" था, "पुस्तक की संरचनात्मक अखंडता अक्सर प्रश्न में रहती है।" व्यवस्थाविवरण के लिए सामान्य दृष्टिकोण यह है कि इसे मूल कोर के साथ लेकिन बहुत सारे पूरक वृद्धि और दोहरे परिचय के साथ पाया जाए। वॉन रैड, "बी", ने 1938 में ड्यूटेरोनॉमी के संरचनात्मक पैटर्न के महत्व पर ध्यान आकर्षित किया। 1938 में, वॉन रॉड ने पुस्तक को देखा और कहा कि इस चीज़ की एक सुसंगत संरचना है। याद रखें, मैंने आपको इसकी एक रूपरेखा दी थी। उन्होंने एक बार फॉर्म को गंभीरता से देखा और उन्हें लगा कि संपूर्ण रूप से संरचनात्मक एकता प्रदर्शित हुई है। लेकिन फिर "सी" मेरेडिथ क्लाइन ने पुस्तक की अखंडता का सम्मान करते हुए आलोचनात्मक पद्धति का उपयोग किया, जिससे ड्यूटेरोनॉमी की संरचना पर एक नया दृष्टिकोण खुलना चाहिए, जिसके बदले में इसकी व्याख्या और तारीख पर प्रभाव पड़ता है।

हमने पिछले सप्ताह अपना अधिकांश समय "सी" पर बिताया। अंक 1 से 12 तक मेरा प्रयास उस संधि-संविदा सादृश्य पर क्लाइन के तर्क और फिर तिथि के लिए उस सादृश्य के निहितार्थ को संक्षेप में प्रस्तुत करने का था। यह हमें पृष्ठ 3 के शीर्ष पर लाता है जो है "डी", "पुराने नियम में वाचा का रूप और इसके ऐतिहासिक निहितार्थ: व्यवस्थाविवरण बहस में मामलों की वर्तमान स्थिति।" अब, शायद यह "डी" हमें आज का अधिकांश समय देगा। मुझे आशा है कि मैं इसे आज ही समाप्त कर सकता हूं, और पूजा के केंद्रीकरण के प्रश्न पर आगे बढ़ने के लिए हमारे पास दो सप्ताह का समय बचा है। लेकिन फिर हम वहीं से शुरू करते हैं, "डी" से। और "डी" के अंतर्गत मेरे पास 1 है। "संविदा स्वरूप की प्रकृति और इसकी उत्पत्ति: सांस्कृतिक या ऐतिहासिक।"

एक्सोड पर सामान्य टिप्पणियाँ। 19, जोश. 24 और 1 सैम. 12 1 पर आने से पहले, मैं शीर्षक पर कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, "पुराने नियम का वाचा स्वरूप और इसका ऐतिहासिक निहितार्थ: व्यवस्थाविवरण बहस के मामलों की वर्तमान स्थिति।" मुझे लगता है कि आज इस बात पर व्यापक सहमति है कि पुराने नियम में एक स्पष्ट वाचा का रूप पाया जा सकता है, और वह रूप व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की संरचना में पाया जा सकता है। यह कई अन्य स्थानों पर भी पाया जा सकता है। जिन लोगों ने इस पर चर्चा की है उनमें से अधिकांश लोग इसे निर्गमन 19 से 24 में पाते हैं। यह सिनाई सामग्री है जहां मूल रूप से वाचा स्थापित की गई थी। अधिकांश इसे यहोशू अध्याय 24 में पाते हैं। यहोशू 24 वह स्थान है जहां यहोशू पूरे इस्राएल को प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करने के लिए शकेम में बुलाता है। मैं सोचता हूं कि जोशुआ 24 को उचित रूप से एक अनुबंध नवीनीकरण समारोह कहा जा सकता है। यह जोशुआ के जीवन के अंत पर है; वह लोगों से उनकी आसन्न मृत्यु के समय प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करने के लिए कहता है।

आपके पास नेतृत्व का एक परिवर्तन है जैसा कि आपके पास व्यवस्थाविवरण के अंत में है, जो मूसा के जीवन के अंत में है। नेतृत्व में यह परिवर्तन, आप कह सकते हैं, नेतृत्व के परिवर्तन के उस समय के दौरान, अनुबंध की निरंतरता प्रदान करने का प्रयास करता है। लेकिन आप यहोशू 24 में संधि के वही तत्व पाते हैं जो आप व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पाते हैं। फिर यदि आप 1 शमूएल 12 पर जाते हैं, मेरा शोध प्रबंध 1 शमूएल 12 से संबंधित है, तो आप संधि प्रपत्र, वाचा प्रपत्र के समान, या कम से कम कई, समान तत्व पाते हैं। वह अध्याय सैमुअल के जीवन के अंत में है जहां वह शाऊल के राज्य की स्थापना के लिए राजशाही में परिवर्तन का प्रावधान कर रहा है। मेरा अपना विचार है कि 1 शमूएल 11:14 से 12:25 गिलगाल का एक अनुबंध नवीनीकरण समारोह है, जिसे न्यायाधीशों की अवधि से राजशाही की अवधि में परिवर्तन और उस संक्रमण के लिए प्रदान करने के लिए "संविदा निरंतरता" कहा जाता है।

वाचा और इतिहास: बाल्टज़र एट अल।

मेरा कहना यह है कि इस बात पर काफी व्यापक सहमति है कि आप निर्गमन, व्यवस्थाविवरण, जोशुआ और 1 शमूएल 12 में वाचा का रूप पा सकते हैं। किसी भी तरह से सर्वसम्मति से नहीं, लेकिन उस पर काफी अच्छी आम सहमति है। हालाँकि, फॉर्म की उत्पत्ति और इसके परिणामस्वरूप इसके ऐतिहासिक निहितार्थ पर कोई समान सहमति नहीं है। यहीं पर आप चर्चा से अधिक विवाद में पड़ जाते हैं। कई लोग पहचानेंगे कि रूप तो है, लेकिन उसका मूल क्या है? फॉर्म के ऐतिहासिक निहितार्थ क्या हैं? कुछ विद्वानों ने साहित्यिक रूप की उपस्थिति से ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालने के प्रयासों का विरोध किया है। वे केवल स्वरूप को देखना चाहते हैं , लेकिन वे उससे ऐतिहासिक निष्कर्ष नहीं निकालना चाहते। मेरी पुस्तक, पृष्ठ 144, नोट 30 में, बाल्ट्ज़र नाम का एक व्यक्ति, जिसने *द कॉवेनेंट फॉर्मूलरी नामक पुस्तक लिखी थी,* मेंडेलसन के लेख "प्राचीन निकट पूर्व में इज़राइल में कानून और अनुबंध" पर टिप्पणी करते हुए मेंडेलसन के बारे में कहता है, "वह इसमें अधिक रुचि रखता है।" ऐतिहासिक प्रश्न जबकि वर्तमान कार्य स्वयं को अधिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण तक सीमित रखता है। निस्संदेह, इस शुरुआत के आधार पर ऐतिहासिक क्षेत्र में आगे के निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, लेकिन मैं प्रश्नों के दोनों सेटों को समय से पहले एक साथ लाना पद्धतिगत रूप से खतरनाक मानता हूं। बाल्ट्ज़र जो कर रहा है वह फॉर्म की उपस्थिति पर ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालने में झिझक रहा है। उनका कहना है कि प्रश्नों के दोनों सेटों को समय से पहले एक साथ लाना पद्धतिगत रूप से खतरनाक है।

फिर वहां एक जर्मन विद्वान है जो कहता है, "ऐतिहासिक चैनल जिनके द्वारा कोई पुराने नियम की वाचा के निर्माण के लिए हित्ती संधि संधि की समानता को समझा सकता है, अभी भी काफी अस्पष्ट हैं।" उनका कहना है कि हित्ती संधि प्रपत्र और अनुबंध के बीच ऐतिहासिक संबंध काफी अस्पष्ट है। फिर एक अन्य साथी बाल्ट्ज़र के बारे में बोलते हुए कहता है, "बाल्ट्ज़र अपने रूप की आलोचनात्मक जांच और एपिसोड के वर्णनकर्ता की ऐतिहासिकता के बीच एक तीव्र अलगाव पर मौजूद है। ऐतिहासिक मामलों के प्रति यह रिज़र्व, जो अभी भी संशयवाद से बहुत कम है, वॉन राड के प्रभाव के कारण इसकी शक्ति है। इस तरह, बाल्ट्ज़र ने जल्दबाजी और समय से पहले निष्कर्ष निकालने से सफलतापूर्वक बचा लिया है। एक लेखक को अपनी सामग्री के दायरे को सीमित करने का अधिकार है, लेकिन यह निराशाजनक है कि बाल्टज़र ऐतिहासिक निष्कर्षों से

इनकार करते हैं।

डीजे मैक्कार्थी

तब डीजे मैक्कार्थी कहते हैं, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस सादृश्य से बहुत अधिक दावा किया गया है, और विशेष रूप से नाजायज ऐतिहासिक निष्कर्ष इससे निकाले गए हैं। फिर भी यह साक्ष्य को नकारता नहीं है जैसा कि सादृश्य के लिए है।" दूसरे शब्दों में, सादृश्य रखें, लेकिन सादृश्य से ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालने में सावधानी बरतें। खैर, मुझे लगता है कि जब आप गंभीर प्रश्न पूछते हैं तो सावधानी निश्चित रूप से जरूरी है। मुझे लगता है कि यहीं पर फॉर्म क्रिटिकल पद्धति का अक्सर दुरुपयोग किया जाता है। आपको एक निश्चित फॉर्म मिलता है, और आप उस सेटिंग का बहुत ही काल्पनिक प्रकार का पुनर्निर्माण करते हैं जिसने फॉर्म का निर्माण किया है , और निकाले गए ऐतिहासिक निष्कर्ष बहुत संदिग्ध हो सकते हैं। देखिए, फॉर्म क्रिटिकल मेथडोलॉजी के बारे में पूरी बात यह है कि यदि आपके पास एक निश्चित साहित्यिक फॉर्म है, तो यह एक निश्चित ऐतिहासिक सेटिंग का अनुमान लगाता है जिसने फॉर्म को जन्म दिया। यह तकनीकी शब्द *सिट्ज़ इम लेबेन* है जिसने इस फॉर्म को जन्म दिया, और आप वापस जाकर समझना चाहेंगे कि वह कौन सी स्थिति थी जिसने इस फॉर्म को जन्म दिया।

मुझे ऐसा लगता है कि किसी विशेष रूप की ऐतिहासिक सेटिंग को रेखांकित करने का विवेकपूर्ण प्रयास एक उपयोगी व्याख्यात्मक उपकरण हो सकता है और मुझे ऐसा लगता है कि यहां हमारे पास एक निश्चित रूप है, और विवेकपूर्ण तरीके से हम पूछ सकते हैं कि वह सेटिंग क्या थी जिसने इसे जन्म दिया, और इससे संबंधित फॉर्म के महत्व और व्याख्या को समझने में मदद मिल सकती है। यदि आप इससे बचना चाहते हैं, तो आप फॉर्म का अध्ययन ख़राब कर देंगे। मुझे लगता है कि यहां, जब हम अनुबंध के स्वरूप और उसके ऐतिहासिक निहितार्थों के बारे में बात कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से हमें सावधानी की आवश्यकता है; लेकिन हमें अनुबंध प्रपत्र के ऐतिहासिक निहितार्थों को अपनाने से इनकार नहीं करना चाहिए।

1. संविदा स्वरूप की प्रकृति और इसकी उत्पत्ति: सांस्कृतिक या ऐतिहासिक।

ठीक 1. "संविदा स्वरूप की प्रकृति और इसकी उत्पत्ति: सांस्कृतिक या ऐतिहासिक।" अब, मैंने उस शीर्षक को इस तरह रखा है क्योंकि जरूरी नहीं कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक एक दूसरे के विपरीत हों। कोई चीज़ एक ही समय में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक हो सकती है, लेकिन वास्तविक अर्थों में मुझे लगता है कि यह रूप सांस्कृतिक और ऐतिहासिक है। वाचा सिनाई में ऐसी स्थिति में स्थापित की गई थी जहां वाचा की पुष्टि की गई थी। वहाँ बलिदान, खून का छिड़काव इत्यादि थे, इसलिए आप कह सकते हैं कि यह सांस्कृतिक है, लेकिन साथ ही यह ऐतिहासिक भी है। मेरे द्वारा इसे इस तरह रखने का कारण यह है कि वॉन रैड ने इसके साथ क्या किया है।

पिछले सप्ताह को याद करें , और उससे भी पहले, हमने नोट किया था कि वॉन रैड ने 1938 में ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक की संरचना के बारे में बात की थी। मुझे लगता है कि मैंने आपको वह पिछले सप्ताह दिया था: जिस तरह से उन्होंने पुस्तक की रूपरेखा तैयार की और जिस संरचना को उन्होंने देखा। उन्होंने प्रस्तावित किया कि वह संरचना पंथ से ली गई थी, और उन्हें लगा कि संरचना इज़राइल में संरक्षित थी और इज़राइल में पारित हुई थी और लेवियों के उपदेश से व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में इसका स्थान पाया, और यह पंथ मूल का था या सुधार।

अब वह 1938 में था। इससे पहले कि कोई संधि-संविदा विश्लेषण पर ध्यान आकर्षित करता: उससे बहुत पहले। मेंडेनहॉल का लेख 1954 में था, इसलिए यह काफी बाद में आया। हालिया संधि सामग्री के प्रकाश में आने के साथ, वॉन रैड ने अपनी स्थिति नहीं बदली है, हालांकि वह संधि-संविदा सादृश्य को पहचानते हैं और स्वीकार करते हैं। यदि आप उनके *ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी* को देखें , जो 1957 में प्रकाशित हुआ था, तो यह उसका पहला खंड है, पृष्ठ 132, वे कहते हैं, "प्राचीन निकट पूर्वी संधियों की तुलना, विशेष रूप से चौदहवीं और तेरहवीं शताब्दी में हित्तियों द्वारा की गई संधियों की तुलना ईसा पूर्व ने पुराने नियम के अनुच्छेदों के साथ, दोनों के बीच बहुत सी समान बातों का खुलासा किया है, विशेष रूप से रूप के मामले में, कि सुजरेन संधियों और कुछ अंशों में दिए गए इज़राइल के साथ यहोवा की वाचा के विवरण के प्रदर्शन के बीच कुछ संबंध होना चाहिए। पुराने नियम में।" फिर वह हमने जो चर्चा की है उसमें से अधिकांश पर अपनी समीक्षा देता है: संधि की संरचना और इसकी तुलना बाइबिल सामग्री से कैसे की जाती है। उनका कहना है कि यह कई अनुच्छेदों में पाया जाता है, जिनमें वे भी शामिल हैं जिनका मैंने अभी उल्लेख

किया है। वह आगे कहते हैं, "भले ही अभी भी उत्तरों के विवरण के कई प्रश्न हों, कम से कम इसमें कोई संदेह नहीं है कि दो प्रकार की सामग्री एक दूसरे से संबंधित हैं। संधि और अनुबंध सामग्री हैं, और संबंध के संबंध में पोस्ट-एपोस्टोलिक समय के पाठ में फॉर्म का पता लगाया जा सकता है। यहां, निश्चित रूप से, इज़राइल ने कब्जा कर लिया, लेकिन हमें पुराने नियम की कुछ प्रासंगिक सामग्री की उम्र याद आती है। जब हम प्रासंगिक पुराने नियम की कुछ सामग्री की उम्र को याद करते हैं , हमें यह मानना होगा कि इज़राइल इस संधि योजना से बहुत पहले ही परिचित हो गया था, शायद न्यायाधीशों के समय से भी पहले। अब यह दिलचस्प है: वह बुनियादी संरचना के बारे में कहते हैं कि इज़राइल अपने इतिहास में बहुत पहले ही इससे परिचित हो गया होगा। शायद न्यायाधीशों के समय में ही। लेकिन यह उनके *ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी में 1957 में था*।

उदाहरण के लिए, वॉन रैड जोशुआ 24 में उस अनुबंध-संधि अवधि की शुरुआत पाते हैं। उन्होंने 1957 में अपने *धर्मशास्त्र में इसका वर्णन किया है*। 1964 में उन्होंने व्यवस्थाविवरण पर अपनी टिप्पणी प्रकाशित की। वह फिर से इस पर चर्चा करता है, लेकिन अब व्यवस्थाविवरण के संबंध में। पेज 21 से 23 पर वह कहते हैं, "अंत में हमें व्यवस्थाविवरण में प्रयुक्त एक प्रकार की रचना का उल्लेख करना चाहिए, जिसे विद्वानों ने हाल ही में मान्यता दी है, अर्थात्, अनुबंधों के लिए उपयोग की जाने वाली फॉर्मूलरी। इस पर चर्चा अभी शुरू हुई है। यह कुछ के लिए जाना जाता है वह समय जो प्राचीन निकट पूर्व में प्रबल था, विशेष रूप से हित्तियों ने, एक निश्चित पैटर्न के अनुसार अपने जागीरदारों के साथ अपनी संधियाँ तैयार कीं। लेकिन यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इस संधि पैटर्न को पुराने नियम के कुछ हिस्सों में नहीं देखा जा सकता है , और दूसरों के बीच में, व्यवस्थाविवरण में।" उन्होंने फिर से उस फॉर्म की चर्चा की, जिसे मैं नहीं दोहराऊंगा। लेकिन वह कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण के समय, इस पैटर्न का लंबे समय से साहित्यिक और घरेलू उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र रूप से उपयोग किया गया था; यहां तक कि व्यक्तिगत इकाइयों ने भी बहुत छिटपुट स्थानों पर उपयोग किया था, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे पहले से उल्लिखित पूर्ण रूप पर आधारित हैं।" लेकिन फिर वह कहते हैं कि यह सवाल अभी भी काफी खुला है कि कैसे और कब इज़राइल को जागीरदारों के साथ इन प्रारंभिक निकट पूर्वी संधियों के रूप में भगवान के साथ अपने रिश्ते के बारे में समझ आया।

प्रश्न अभी भी खुला है: जागीरदारों के साथ प्रारंभिक निकट पूर्वी संधियों के रूप में इज़राइल को ईश्वर के साथ अपने संबंध की समझ कैसे और कब आई। बाद में वह कहते हैं कि अगर हम पूछें कि जिस पैटर्न के अनुसार व्यवस्थाविवरण की व्यवस्था की गई है, उसमें *सिट्ज़ इम लेबेन की क्या मांग है, तो इसे केवल एक सांस्कृतिक उत्सव से लिया जा सकता है।* देखिए, ये सांस्कृतिक मूल के विचार हैं। "इसे केवल एक सांस्कृतिक उत्सव से ही लिया जा सकता है। शायद वाचा के नवीनीकरण की दावत से। यह अनुमान एक औपचारिक वाचा निर्माण, व्यवस्थाविवरण 26: 16 - 19 के सम्मिलन द्वारा समर्थित है। इस प्रकार नियमित वाचा सूत्रीकरण का शास्त्रीय पैटर्न, किसी भी मामले में, केवल विकृत रूप में, व्यवस्थाविवरण में प्रकट होता है। इसकी स्थापना वह पंथ है जिसमें व्यवस्थाविवरण का रूप मूल रूप से निहित था लेकिन पुस्तक में इसे पहले ही छोड़ दिया गया है जैसा कि अब हमारे पास है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसकी सामग्री अब आम लोगों के लिए घरेलू निर्देश के रूप में सामने आती है।" दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा है, वह यह है कि भले ही आप पुस्तक की संरचना में संधि-संविदा सादृश्य पाते हैं, लेकिन व्यवस्थाविवरण का मूल रूप सामान्य जन के लिए उपदेशात्मक निर्देश के रूप में है।

वह सीधे अपने "लेविटिकल थ्योरी" में वापस आ जाता है कि लेवियों ने उपदेश में इस वाचा के रूप को संरक्षित किया था, और यह पंथ में संरक्षित और पीढ़ियों से चली आ रही प्राचीन परंपराओं की उनकी स्मृति है। तो फिर जब व्यवस्थाविवरण, पृष्ठ 26 की तारीखों के बारे में उनके निष्कर्ष की बात आती है, तो वे कहते हैं, "हम उत्तरी अभयारण्यों में से एक, शेकेम या बेथेल को व्यवस्थाविवरण का उद्गम स्थान मानेंगे, और 621 से पहले की सदी इसकी तारीख होनी चाहिए . इससे भी पीछे जाने का कोई पर्याप्त कारण नहीं है।" दूसरे शब्दों में, यह 621 ईसा पूर्व से पहले की शताब्दी है; वह 700 के दशक में होगा। काफी देर हो चुकी है, और उसे लगता है कि व्यवस्थाविवरण में आपको जो रूप मिलता है वह पंथ से प्राप्त रूप है और लेवियों के उपदेश द्वारा संरक्षित है। तो आप देखिए, यह वास्तव में रूप की उत्पत्ति के लिए एक सांस्कृतिक व्युत्पत्ति है, भले ही वह हित्ती संधि सामग्री के साथ समानता को पहचानता है।

वानॉय का सांस्कृतिक मूल परिकल्पना का विश्लेषण अब, मुझे ऐसा लगता है कि सांस्कृतिक मूल

परिकल्पना वास्तव में प्रश्न के स्वरूप की प्रकृति और पुराने नियम में इसके उपयोग के लिए पर्याप्त स्पष्टीकरण नहीं देती है। यह वास्तव में फॉर्म के प्रारंभिक उपयोग के अवसर और कारण के अधिक बुनियादी प्रश्न का उत्तर नहीं देता है। वह कब था? वह वास्तव में इसे संबोधित नहीं करता है।

बाइबल संधि-संविदा के प्रारंभिक उपयोग को सिनाई में परमेश्वर द्वारा मूसा को दी गई वाचा सामग्री की प्रस्तुति के रूप में प्रस्तुत करती है। वही इसका मूल है. तो जैसा कि क्लाइन कहते हैं, "भगवान ने हित्ती संधि प्रपत्र के कानूनी साधन का उपयोग किया, जो उस समय का ज्ञात रूप था, इस वाचा को अपने लोगों के सामने प्रस्तुत करने और उस ज्ञात कानूनी साधन की तर्ज पर इसे संरचित करने के साधन के रूप में।"

रिफॉर्म्ड थियोलॉजिकल रिव्यू में जेए थॉम्पसन ने "द कल्टिक क्रेडो एंड द सिनाई ट्रेडिशन" (यह आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ पांच पर है) नामक एक लेख में यह कहा है: "इस बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि धर्मनिरपेक्ष संधियों में ऐतिहासिक प्रस्तावना थी किसी भी संधि का मूल पहलू. न ही हमें इस बात पर संदेह करने की आवश्यकता है कि यह, भले ही कुछ उन्नत रूप में, पूर्ववर्ती ऐतिहासिक घटनाओं की एक सही रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिसे जागीरदार द्वारा संधि की स्वीकृति के लिए एक मजबूत तर्क के रूप में पेश किया गया था। संधियों में ऐतिहासिक प्रस्तावना हमें वास्तविक इतिहास देती है, हमें महान राजा और जागीरदार के बीच पिछले संबंधों के बारे में बताती है जो महान राजा के प्रति जागीरदार के दायित्व का आधार प्रदान करती है। ठीक है, वह कहते हैं, "निश्चित रूप से, वॉन रैड, व्यवस्थाविवरण और निर्गमन 19-24 पर चर्चा करते समय सिनाई घटनाओं के ऐतिहासिक पाठ पर ध्यान देते हैं।" व्यवस्थाविवरण का पहला भाग, जो ऐतिहासिक प्रस्तावना के रूप में कार्य करता है, वापस जाता है और समीक्षा करता है सिनाई.

लेकिन, वॉन रैड के लिए, यह ऐतिहासिक वर्णन अत्यंत संदिग्ध ऐतिहासिकता की एक सांस्कृतिक किंवदंती मात्र है। लेकिन यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि क्या एक सांस्कृतिक किंवदंती मांगे गए उद्देश्य को पूरा कर सकती है। देखिए, जिस तरह से एक ऐतिहासिक प्रस्तावना काम करती है, ये चीजें वास्तव में होनी चाहिए यदि वे चल रहे रिश्ते का आधार बनने जा रही हैं। थॉम्पसन कहते हैं, "यह नहीं माना जाना चाहिए कि किसी सांस्कृतिक धार्मिक अनुष्ठान को अंतर्निहित ऐतिहासिक घटनाओं से अलग किया जाना चाहिए।" मुझे लगता है बात यही है. हो

सकता है कि पंथ में कोई संरक्षण बना हो। यह कुछ हद तक अटकलबाजी है, लेकिन आप देखिए, इसकी शुरुआत कहां से हुई? इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई? इस बात का ऐतिहासिक आधार क्या था? मुझे ऐसा लगता है कि वॉन रैड के सांस्कृतिक व्युत्पत्ति दृष्टिकोण से वह बिंदु अपर्याप्त है। वह रिश्ता--वाचा का रिश्ता--एक विशिष्ट *ऐतिहासिक* अवसर पर स्थापित किया गया था। प्रपत्र में यह माना गया है कि एक विशिष्ट ऐतिहासिक अवसर था जब अनुबंध मूल रूप से और औपचारिक रूप से स्थापित किया गया था। तो, 1. "संविदा प्रपत्र की प्रकृति: क्या यह सांस्कृतिक या ऐतिहासिक है" के अंतर्गत, मुझे ऐसा लगता है कि वॉन रैड प्रपत्र की उत्पत्ति के उस प्रश्न के साथ न्याय नहीं करता है। हम इज़राइल की धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं की सेटिंग, या उस रूप का प्रारंभिक परिचय खोजने के लिए सिनाई वापस जाते हैं।

2. संधि प्रपत्र का विकास और पुस्तक की तिथि के लिए इसके निहितार्थ
व्यवस्था विवरण

ठीक है, 2. हम व्यवस्थाविवरण बहस में मामलों की वर्तमान स्थिति के बारे में बात कर रहे हैं, 2 है: "संधि प्रपत्र का विकास और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की तारीख के लिए इसके निहितार्थ।" जब हमने पिछले सप्ताह क्लाइन के दृष्टिकोण पर चर्चा की, तो मुझे आशा है कि यह आपके लिए स्पष्ट हो गया है कि मोज़ेक मूल के उनके मामले का एक बड़ा हिस्सा उनके दावे के साथ निहित है कि संधि प्रपत्र एक विकासवादी विकास के माध्यम से इस अर्थ में चला गया कि एक क्लासिक हित्ती पैटर्न था बाद की संधियों, विशेष रूप से एसरहद्दोन संधियों और सेफ़ायर संधियों में इसकी नकल नहीं की गई। अब, मैं उस प्रश्न को थोड़ा करीब से देखना चाहता हूं क्योंकि यह एक ऐसा बिंदु है जिस पर सवाल उठाया गया है और इस पर बहुत कुछ निर्भर है।

एक। एसरहद्दोन की जागीरदार संधियों की तुलना हित्ती सुजरेन संधियों से की गई

तो, चलिए आगे बढ़ते हैं a) "एसरहद्दोन की जागीरदार संधियों की तुलना हित्ती सुजरेन संधियों से की गई है। और एक परिचयात्मक टिप्पणी: एसरहद्दोन की जागीरदार संधियों की खोज 1955 में एक ब्रिटिश पुरातत्वविद् द्वारा वर्तमान इराक में निमरुद नामक स्थान पर की गई थी।

गोलियाँ नाबू के मंदिर के सिंहासन कक्ष में 612 ईसा पूर्व मेदियों द्वारा आग से इमारत को नष्ट करने के परिणामस्वरूप मलबे के बीच पाई गईं। इन ग्रंथों को बारबरा पार्कर नामक एक महिला ने एक संधि के रूप में पाया और पहचाना। यह 672 ईसा पूर्व में अश्शूर के राजा एसरहद्दोन द्वारा की गई एक संधि थी। इसमें एक से अधिक संधियाँ थीं लेकिन पाठ एक ही था। यह सिर्फ इतना है कि संधि विभिन्न व्यक्तियों की संख्या के साथ संपन्न हुई थी, और नाम बदल जाता है: एसरहद्दोन का नहीं, बल्कि अधीनस्थ नाम बदल जाता है। ग्रंथ डुप्लिकेट थे, केवल उन विभिन्न शासकों के नामों में भिन्नता थी जिनके साथ संधियाँ की गई थीं। तो, संधियाँ वास्तव में एसरहद्दोन और विभिन्न जागीरदार राज्यों के साथ संधि ग्रंथ थीं। लेकिन डीजे वाइसमैन ने उन्हें 1958 में *इराक* नामक खंड में , खंड 20 में प्रकाशित किया। *इराक* पत्रिका का नाम है, खंड 20, 1958।

यदि आप उन संधियों को देखें, तो आप पाएंगे कि कुछ तत्व बहुत हद तक पिछली हित्ती संधियों के समान हैं। तो कुछ समानताएं हैं. लेकिन उन समानताओं के बावजूद, कुछ महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। यदि आप संरचना को देखेंगे तो आपको वह अंतर तुरंत दिखाई देगा। यदि आप संरचना को देखें, तो आप देखेंगे कि यह उन छह तत्वों का अनुसरण करती है: पहला, प्रस्तावना; दूसरा, देवता गवाह के रूप में; तीसरा, शर्तें; चौथा, श्राप; पाँचवाँ, निष्ठा की शपथ; और फिर छठा, शाप का एक और खंड, उपमा के रूप में शाप।

अब मैं उनमें से प्रत्येक पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। सबसे पहले, प्रस्तावना: हित्ती संधियों में यह संधि के पक्षों का परिचय देता है, और इन एसरहद्दोन संधियों के मामले में, यह दस्तावेज़ के उद्देश्य को इंगित करता है। एसरहद्दोन कहते हैं, "अश्शूर के राजा, एसरहद्दोन के पुत्र, युवराज अशर्बनिपाल के संबंध में । " इस संधि का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि जब एसरहद्दोन की मृत्यु हो जाए, तो यह विशेष पुत्र, युवराज, उसका उत्तराधिकारी होगा। तो, इसका संबंध असीरिया के सिंहासन के उत्तराधिकार से था। तब उद्देश्य अश्शूर के राजा एसरहद्दोन के पुत्र, युवराज, अशर्बनिपाल से संबंधित था। और यह संधि उन सभी शासकों के लिए बाध्यकारी थी जिन पर एसरहद्दोन ने असीरियन साम्राज्य में सत्ता संभाली थी। अलग-अलग व्यक्तियों की कई प्रतियाँ मिली हैं। ठीक है, वह प्रस्तावना थी।

गवाह के रूप में देवता दूसरा खंड है, जिसमें आपके पास उन देवताओं की सूची है जिनकी

उपस्थिति में संधि संपन्न हुई थी। उस समारोह के पाठ में संकेत है जिसमें इन देवताओं की छवियां लाई गईं और जिनके सामने संधि को आधिकारिक तौर पर अधिनियमित किया गया और लागू किया गया। सत्रह देवता गिनाये गये हैं। तो आपके पास देवताओं की वह सूची है।

फिर ये शर्तें हैं. शर्तें इस अर्थ में अपेक्षाकृत संकीर्ण रूप से केंद्रित हैं: वे एशर्बनिपाल के शासन की स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं क्योंकि उन्हें एसरहद्दोन का उत्तराधिकारी नामित किया गया है ; यही संधि की चिंता है। इसलिए शर्तों में हर संभावित प्रकार की स्थिति को संबोधित करने का प्रयास किया गया है जो उत्तराधिकारी के रूप में अशर्बनिपाल की स्थिति के लिए खतरा हो सकता है। प्रावधानों की सीमा और उनके द्वारा कवर की जाने वाली आकस्मिकताओं की सराहना करने के लिए आपको लगभग संधि को पढ़ना होगा।

ऐसे तैंतीस खंड हैं जिन्हें रखने की शपथ जागीरदार लेता है। इन्हें पाँच समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है। सबसे पहले, वे जो एसरहद्दोन के उत्तराधिकारी के रूप में अशर्बनिपाल के प्रति जागीरदार की वफादारी सुनिश्चित करते हैं । दूसरे, वे जो विद्रोहियों के ख़िलाफ़ की जाने वाली कार्रवाई की रूपरेखा तैयार करते हैं। तीसरा, वे जो सिंहासन पर कब्ज़ा करने के प्रयासों को रोकते हैं। चौथा, वे जो अशर्बनिपाल को गद्दी से हटाने के उद्देश्य से शाही घराने के अन्य सदस्यों के साथ साज़िश पर रोक लगाते हैं। उदाहरण के लिए, अशर्बनिपाल को ताज के राजकुमार के रूप में एशरहादोन के खिलाफ करने के लिए किसी भी दृष्टिकोण का जवाब नहीं देना , और अशर्बनिपाल और उसके भाइयों के बीच विभाजन करने की किसी भी साजिश की रिपोर्ट अशर्बनिपाल को करने के लिए व्यक्तिगत शक्ति का दावा करने वाले किसी भी व्यक्ति से प्रभावित नहीं होना। पांचवां, यह ली गई शपथों की शाश्वत और बाध्यकारी प्रकृति पर जोर देता है। शर्तें संकीर्ण रूप से केंद्रित हैं; यह सब सुरक्षा से संबंधित है: उत्तराधिकार का अधिकार और एशरहद्दोन की मृत्यु के बाद अशर्बनिपाल की निरंतर शक्ति।

एसरहद्दोन और अशर्बनिपाल के साथ जागीरदार के संबंधों को नियंत्रित करने वाली शर्तों की 355 पंक्तियों के बाद , आपके पास वह दस्तावेज़ है जो टैबलेट की शपथों को बदलने, उपेक्षा करने, या उल्लंघन करने, या इसे मिटाने वाले किसी भी व्यक्ति पर अभिशाप की घोषणा द्वारा संरक्षित है। प्रत्येक देवता का अलग-अलग नाम रखा गया है और प्रत्येक विशेष देवता की गतिविधि

की एक विशेष अभिशाप विशेषता का उच्चारण किया गया है। आपके पास इन सभी देवताओं को शापों के साथ सूचीबद्ध किया गया था, और उनमें से प्रत्येक देवता को प्रत्येक से जुड़े एक विशेष शाप के साथ फिर से सूचीबद्ध किया गया है। उदाहरण के लिए, “आसमान और धरती की ज्योति शमाश तुम्हें यह कहकर उचित निर्णय न दे, कि यह तुम्हारी दृष्टि में अन्धेरा हो। अंधेरे में चलो।" शमाश सूर्य देवता हैं, इसलिए आपके पास शामिल देवता की विशेष विशेषता से जुड़ा एक अभिशाप है । तो आपको इन देवताओं में से कई का क्रोध उस व्यक्ति पर पड़ेगा जिसने शर्तों का उल्लंघन किया है। फिर पाँचवाँ, निष्ठा की शपथ। इस खंड में जागीरदार एसरहद्दोन और अशर्बनिपाल के प्रति निष्ठा की शपथ लेते हैं, और यहां की भाषा पहले व्यक्ति बहुवचन में बदल जाती है, जो इंगित करती है कि दस्तावेज़ का उपयोग सार्वजनिक समारोह में किया जाना था जिसमें लोग कहते हैं, "हम यह करेंगे।"

छठा, निष्ठा की शपथ के बाद उपमा के रूप में शाप भी होते हैं। तुम शाप पर लौट आओ। इनमें से अधिकांश ऐसी शैली में तैयार किए गए हैं जो सामान्य अवलोकन से उपमाओं का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए: "जैसे नर और मादा बच्चों और नर और मादा मेमनों को चीरकर उनकी अंतड़ियाँ उनके पैरों के ऊपर लुढ़क जाती हैं, वैसे ही तुम्हारे बेटे और बेटियों की अंतड़ियाँ तुम्हारे पैरों के ऊपर लुढ़क जाएँ।" यह उस प्रकार की उपमाओं वाला एक लंबा खंड है जिसे "अभिशाप उपमा" कहा जाता है। डीजे वाइजमेन का सुझाव है कि उनमें से कई, यदि सभी नहीं, तो संधि के टूटने के परिणामों को स्पष्ट रूप से चित्रित करने के लिए लोगों के सामने प्रदर्शित किए गए होंगे। दूसरे शब्दों में, शायद नर और मादा बच्चों की अंतड़ियों के टुकड़े उनके पैरों पर लुढ़क रहे हों। हो सकता है कि उन्होंने यह प्रदर्शित करने और यह दिखाने के लिए कि आपके साथ क्या होगा, इनमें से कुछ जानवरों को काट दिया होगा। तस्वीर पाने के लिए आपको लगभग इसे पढ़ना होगा। उदाहरण के लिए, “जिस प्रकार खुले आकाश से वर्षा नहीं होती, उसी प्रकार तुम्हारे खेतों और घास के मैदानों पर वर्षा और ओस न गिरे। तेरी भूमि पर ओस के स्थान पर जलते अंगारों की वर्षा हो। जिस प्रकार भूखी भेड़ अपने बच्चों का मांस मुंह में डालती है, उसी प्रकार तू भी अपने भाइयों और बेटों, बेटियों के मांस से अपनी भूख मिटा। जिस प्रकार साँप और नेवला एक ही बिल में एक साथ घुसकर एक-दूसरे के पैर काटने के बारे में ही नहीं सोचते, उसी प्रकार आप और आपकी स्त्रियाँ

एक-दूसरे के जीवन को काटने के बारे में सोचे बिना एक ही कमरे में प्रवेश न करें। उस खंड के बाद संधि तिथि और संधि की चिंताओं के एक संक्षिप्त विवरण के साथ अचानक समाप्त हो जाती है, और वह यह है कि एशर्बनिपाल को एसरहद्दोन का राजकुमार और उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाता है । यह प्रपत्र का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण है.

3. ऐतिहासिक प्रस्तावना की अनुपस्थिति रूपरेखा की संख्या तीन असीरियन संधि संधि और हित्ती के बीच कुछ विरोधाभासों और मतभेदों को उजागर करना शुरू करती है । संख्या 3 है: "ऐतिहासिक प्रस्तावना का अभाव।" जैसा कि हमने पहले देखा, हित्ती संधियों का स्वरूप थोड़ा विचलन के साथ काफी सुसंगत है। हित्ती संधियों और असीरियन के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि हित्ती संधि प्रपत्र का दूसरा खंड असीरियन संधि प्रपत्र में नहीं मिलता है। याद रखें हित्ती संधियाँ इस प्रकार थीं: प्रस्तावना, ऐतिहासिक प्रस्तावना, शर्तें - मूल रूप से श्राप, गवाह और आशीर्वाद का विवरण। असीरियन संधियों की कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है। अब इस कारण से यह एक महत्वपूर्ण अंतर है: हित्ती संधि में ऐतिहासिक प्रस्तावना संधि का स्वर निर्धारित करती है। यह महान राजा के परोपकारी कार्य के आधार पर है जो ऐतिहासिक प्रस्तावना में गिना गया है कि जागीरदार को संधि की शर्तों के माध्यम से आज्ञाकारिता के लिए जिम्मेदारी और दायित्व की भावना है। तो आपको ऐतिहासिक प्रस्तावना मिलती है, जिसका अनुसरण शर्तों के साथ किया जाता है। ऐतिहासिक प्रस्तावना उदार महान राजा के प्रति जागीरदार की ओर से दायित्व की भावना प्रदान करती है।

तो यह उन लाभकारी कार्यों के आधार पर है कि महान राजा शर्तों के पालन की मांग को उचित ठहराते हैं। वर्तमान में उपलब्ध प्रत्येक हित्ती संधि के टूटे हुए पाठ पर एक ऐतिहासिक प्रस्तावना है, या कम से कम एक के लिए जगह है। अब मैं यह कहता हूं, भले ही यह बहस का मुद्दा है।

मेंडेनहॉल से पहले हित्ती संधियों के प्रारंभिक अध्ययन ने पुराने नियम की वाचा सामग्री और हित्ती संधि सेट के बीच सादृश्य पर ध्यान आकर्षित किया। संधियाँ वास्तव में उससे बहुत पहले प्रकाशित की गई थीं और उनका अध्ययन किया गया था, लेकिन पुराने नियम में अंतर्निहित वाचा के

साथ संबंध कभी नहीं बनाया गया था। पहले एक हंगेरियन साथी, विक्टर कोरोसेक थे, जिन्होंने 1931 में जर्मनी में हित्ती संधि ग्रंथों पर चर्चा करते हुए एक खंड प्रकाशित किया था। हित्ती संधि पाठ का एक मानक उपचार था जो इस पुस्तक में बाइबिल की तुलना के बिना था। कोरोसेक ने 1931 में ऐतिहासिक प्रस्तावना में कहा, "इस तरह की अभिव्यक्ति की निरंतर पुनरावृत्ति से पता चलता है कि हट्टुसा में," (हित्ती साम्राज्य की राजधानी) "किसी ने इसे हर जागीरदार संधि का एक अनिवार्य तत्व माना।" ग्रंथों के अध्ययन में, यही उनका निष्कर्ष था।

अब हाल ही में डीजे मैक्कार्थी के पूरे काम के दौरान, उन्होंने इस खंड, *ट्रीटमेंट ऑफ कोवेनेंट को प्रकाशित किया* , मेरा मानना है कि यह आपकी ग्रंथ सूची पर है, जो अब इस से भी बाद के संस्करण में सामने आया है। पृष्ठ 5 के शीर्ष पर, *संधि का उपचार*, 1978, मैक्कार्थी इस विचार का विरोध करते हैं कि प्रत्येक हित्ती संधि की एक ऐतिहासिक प्रस्तावना होती है। और उनका कहना है कि उनमें से कुछ के पास ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है, और परिणामस्वरूप उनका कहना है कि ऐतिहासिक प्रस्तावना संधि के रूप में एक आवश्यक तत्व नहीं था।

मैककार्थी को एच. हफ़मैन की प्रतिक्रिया अब आप उस मुद्दे के बारे में कई विस्तृत चर्चाओं में शामिल हो गए हैं, लेकिन मैं आपका ध्यान केवल मैककार्थी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो कहते हैं कि यह फॉर्म में एक आवश्यक तत्व नहीं है। हर्बर्ट हफ़मैन इस पर मैक्कार्थी से असहमत हैं। दुर्भाग्य से, मेरे पास यह आपकी ग्रंथ सूची में नहीं है, लेकिन हर्बर्ट हफ़मैन ने कैथोलिक *बाइबिल क्वार्टरली,* खंड 27, 1965 पृष्ठ 109-110 में "द एक्सोडस, सिनाई, एंड द क्रेडो" नामक एक लेख लिखा था। और उन्होंने इस प्रश्न पर मैक्कार्थी से बातचीत की। वह कोरोसेक का समर्थन करते हैं। हफ़मैन कहते हैं, "ऐतिहासिक प्रस्तावना की चूक, और पहली सहस्राब्दी संधि में अधिक विस्तृत और रंगीन शापों की प्रवृत्ति," (वह एस्रहद्दोन संधि है) "संधि संबंध की अवधारणा में एक बुनियादी परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। शक्ति अनुनय का स्थान इस तरह ले लेती है कि हालाँकि संधि का स्वरूप कई मामलों में वही रहता है, लेकिन यह कहना भ्रामक है कि संधि मूल रूप से अपरिवर्तित रहती है, डीजे वाइसमैन और मैक्कार्थी के विपरीत, जो संधियों में अंतर को कम करते हैं।

अब, मैं इसकी विस्तृत चर्चा में जाने के लिए समय नहीं लूंगा, लेकिन मैं सिर्फ यह उल्लेख करना चाहूंगा कि मैक्कार्थी कहते हैं कि पांच संधियों, प्रारंभिक संधियों की कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं है। और इसलिए उनका कहना है कि इतिहास संधि प्रपत्र का एक अनिवार्य तत्व नहीं था। अब हफमैन बताते हैं, यदि आप यहां उन पांच संधियों को देखते हैं जिनके बारे में मैक्कार्थी कहते हैं कि उनमें ऐतिहासिक प्रस्तावना की कमी है, तो हफमैन उन सभी पांचों का विश्लेषण करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि मैक्कार्थी वास्तव में उन संधियों को देखकर जो निष्कर्ष निकाल रहे हैं उसके लिए उनके पास कोई आधार नहीं है।

उदाहरण के लिए, पहली, मुर्सिलिस द्वितीय और अमुरा के निकमेत्पा के बीच संधि, हफ़मैन का कहना है कि इसकी एक प्रस्तावना है, लेकिन यह बहुत छोटी है। इसमें कहा गया है, "निकमेटपा, मैंने तुम्हें तुम्हारे देश में बहाल कर दिया और तुम्हें तुम्हारे पिता के सिंहासन पर राजा के रूप में बैठाया।" यह एक ऐतिहासिक प्रस्तावना है. यह एक वाक्य है, लेकिन आप देख सकते हैं कि हफ़मैन क्या कह रहे हैं, ऐतिहासिक प्रस्तावना वहाँ है, भले ही मैक्कार्थी कहते हैं कि ऐसा नहीं है । मुझे लगता है कि हफ़मैन सही हैं।

दूसरी, मुर्सिलिस द्वितीय और किआसिलिस के बीच की संधि, एक खंडित संधि है; इसमें अपेक्षित स्थान पर कोई प्रस्तावना नहीं है, लेकिन हफ़मैन का कहना है कि यह निर्णायक नहीं है। उनका कहना है कि यद्यपि मैक्कार्थी का कहना है कि किसी भी उदाहरण में शीर्षकों और शर्तों के अलावा कहीं भी ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं होती है, उन्होंने सुप्पिलुलियम I और अर्ज़िरस के बीच संधि के हित्ती संस्करण को नजरअंदाज कर दिया है जिसमें अनुक्रम प्रस्तावना, शर्त, प्रस्तावना है। अब उसे पता चला कि इस पाठ में एक प्रस्तावना है, लेकिन यह एक अलग क्रम में है; यह मानक आदेश का पालन नहीं करता है.

तीसरा, सुपिलुलियुमा और हुक्कनास के बीच संधि की एक प्रस्तावना है, फिर से यह संक्षिप्त है। “देखो, हुक्कनास, मैंने तुम्हें एक साधारण लेकिन सक्षम व्यक्ति के रूप में प्राप्त किया है, तुम्हारा सम्मान किया है और लोगों के बीच में तुम्हें और हत्तुसास को प्राप्त किया है और मैत्रीपूर्ण तरीके से तुम्हारा परिचय कराया है। मैंने तुम्हें पत्नी के रूप में अपनी बहन दी है।” यह एक ऐतिहासिक प्रस्तावना के रूप में कार्य करता है।

इसलिए मैं चार और पांच के बारे में नहीं बताऊंगा, लेकिन उन सभी के साथ आप एक तकनीकी बहस में पड़ जाएंगे। क्या संधि की कोई प्रस्तावना है या नहीं? मैक्कार्थी कहते हैं, लेकिन फिर हफ़मैन ने दिखाया कि वे ऐसा करते हैं। एक उचित प्रतिक्रिया है. इसलिए ऐतिहासिक प्रस्तावना की अनुपस्थिति हित्ती रूप से विचलन है और यह एक महत्वपूर्ण है, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, क्योंकि प्रस्तावना संधि के लिए स्वर निर्धारित करती है। संधि भागीदारों के बीच एक प्रेमपूर्ण, भरोसेमंद रिश्ते के बजाय, जब आप असीरियन संधियों पर पहुंचते हैं, तो कोई ऐतिहासिक प्रस्तावना नहीं होती है। महान राजाओं के किसी भी परोपकारी कार्य का उल्लेख पहले नहीं किया गया है; इसके बजाय आपके पास जागीरदार पर कच्ची शक्ति थोपने का अधिकार है। जागीरदार को ये सभी चीजें करनी होंगी अन्यथा आपके पास शापों की एक दोहरी सूची है जो उसे भुगतनी होगी यदि वह ऐसा नहीं करता है।

इसलिए ऐतिहासिक प्रस्तावना की कमी न केवल साहित्यिक रूप में अंतर है, बल्कि यह संधि भागीदारों के बीच संबंधों के संबंध में एक बहुत अलग भावना भी स्थापित करती है। इसलिए अधिपति और उसके जागीरदार के बीच स्थापित संबंधों की गुणवत्ता काफी भिन्न होती है।

हमें 10 मिनट का ब्रेक लेने की जरूरत है और फिर हम वापस आकर इस पर कुछ और गौर करेंगे।

प्रतिलेखित: ब्रिटनी गॉर्डन, एथन किलगोर, जेनी मचाडो, मैगी ब्रूक्स,
मेगन एवरी, और विलियम हेगन द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया